The Chitransh Academic & Research
International Journal of Multidisaciplinary Reseaech
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 3 |June 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

भागलपुर जिला के अनुसूचित जाति का साक्षरता प्रतिरूप

चंदन कुमार पासवान[1] एवं डॉ0 संजय कुमार झा[2]

[1]शोधार्थी, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग, ति0 मां0 भा0 वि0 वि0, भागलपुर
[2]कुलपति, रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय, बिश्रामपुर, पलामू, झारखण्ड
पूर्व, विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग, ति0 मां0 भा0 वि0 वि0, भागलपुर

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: ***01.06.25***

*Accepted:****28.06.25***

Published: ***30/06/25***

Keywords: शिक्षा, साक्षरता, चरित्रवान, बुद्धिमान, वीर, साहसी तथा आदर्श आदि

ABSTRACT

शिक्षा वह प्रकाश–पुंज है, जिसके द्वारा बालक की समस्त मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र–सम्पन्न नागरिक बनकर, समाज की सर्वांगींण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत– प्रोत होकर संस्कृति तथा सभ्यता को पुनः जीवित, पुनःस्थापित एवं संवृद्ध करने के लिए प्रेरित और समर्पित होता है। भारतीय नागरिकों में, शिक्षा का बोध, शिक्षा–संस्कृति का उन्नयन और फिर शिक्षा संस्कृति में उदात्त का दर्शन, उत्तरोत्तर भारतीय शिक्षा जगत के संदर्भ में, शिक्षा के सर्वांगींण गुणवत्ता में बदलते और परिवर्तित होते शैक्षणिक हालात का प्रतिफलन है। आम शिक्षित और अशिक्षित नागरिकों के रूप को प्रतीकात्मक तौर पर शैक्षणिक गुणवत्ता के संदर्भ में, दो चरम बिंदुओं के बीच देखा जा रहा है :–पानी से आधा भरा हुआ गिलास या आधा खाली गिलास।

भूमिका :

बिहार राज्य के पूर्वी भाग में गंगा नदी के दक्षिणी तट पर स्थित भागलपुर जिला भारत का एक प्रागैतिहासिक नगर है। यहां का रेशम एवं रेशमि कपड़े का विदेशों में ख्याति के कारण भागलपुर प्राचीन काल से ही शिल्क नगरी के नाम से जाना जाता रहा है। भागलपुर बिहार राज्य का एक प्राचीन ऐतिहासिक जिला है।[1] मध्य गंगा मैदान में अवस्थित यह जिला पूर्वांचल का एक महत्वपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र है। लगभग 2569.5 वर्ग कि०मी० के भूभाग पर इसका अक्षांशीय विस्तार $25^0 5'$ से $25^0 30'$ उत्तरी अक्षांश तथा $86^0 39'$ से $87^0 30'$ पूर्वी देशान्तर तक है (चित्र सं0 1.1)। यह जिला गंगा नदी के दोनों ओर उत्तरी तथा दक्षिणी भूभागों में फैला हुआ है। भौगोलिक दृष्टि से गंगा नदी इसे दो भागों में विभक्त करती है। इस जिले की उत्तरी सीमा का निर्धारण कटिहार, पूर्णिया, मधेपुरा तथा खगड़िया जिले, पूर्व में झारखण्ड का साहिबगंज एवं गोड्डा जिले, पश्चिम में मुंगेर तथा दक्षिण में बाँका जिला करते हैं। भागलपुर जिले की उत्तरी सीमा पर विभिन्न नदियाँ के बाढ़ क्षेत्र, दक्षिणी सीमा पर बाँका जिले की उच्चभूमि, पूर्वी सीमा पर साहिबगंज जिला का उच्च प्रदेश और बाढ़ क्षेत्र तथा पश्चिम सीमा पर मुंगेर जिले की सामान्य उच्च भूमि विस्तृत है। आजादी के पूर्व यह जिला आकार में अत्यधिक बड़ा था, जिसकी भौगोलिक सीमा का निर्धारण उत्तर में नेपाल और दक्षिण में पश्चिम बंगाल करते थे जो वर्त्तमान में सिमटकर काफी छोटा हो गया है। इस जिले में तीन अनुमण्डल–भागलपुर सदर, कहलगाँव और नवगछिया हैं, जिसके अन्तर्गत 16 प्रखण्ड–सह–अंचल है (तालिका सं० 2.1) भागलपुर जिले की प्रशासनिक इकाईयों को प्रदर्शित करता है। इस जिले की कुल आबादी 30,37,766 (2011) है, जनघनत्व 1182 व्यक्ति प्रति वर्ग कि०मी० है। इसके अन्तर्गत 237 ग्राम पंचायत तथा 1536 गाँव हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा अंचल पीरपैंती तथा सबसे छोटा जगदीशपुर है। इस जिले की मुख्य भाषा अंगिका है।

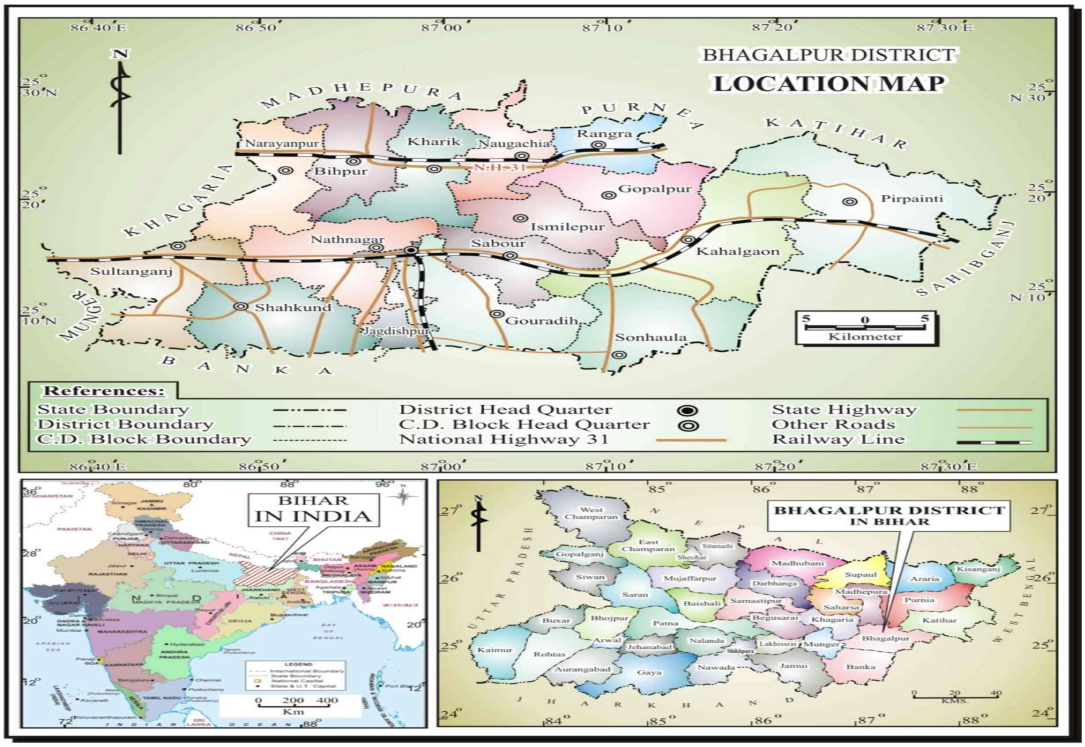

चित्र सं0 : 1.1

बिहार राज्य का 'भागलपुर जिला' एक विकासशील ग्राम–बहुल क्षेत्र है। विकास की किरणें समुचित रूप से इस जिले के प्रत्येक गाँव तक अभी नहीं पहुँची है। इसमें संदेह नहीं कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश में क्षेत्रीय विकास की कई योजनाएँ बनी और उनका क्रियान्वयन भी हुआ है, किन्तु साक्षरता और शिक्षा के अपेक्षाकृत कम प्रचार–प्रसार के करण विभिन्न योजनाओं का लाभ यहाँ के जनसाधारण निवासियों को कम ही मिल सका। चूँकि साक्षरता से ज्ञान–वृद्धि के साथ–साथ रोजगार भी मिलता है, फलतः इसे विकास कार्यक्रमों की सफलता की कुँजी मानी जाती है। यह पर्यावरण में सुधार, स्वास्थ्य की देख–रेख, विश्व घटनाओं को समझने की क्षमता बढ़ाती है तथा कृषि के विकास की गति को तेज करने में हमारी मदद करती है फलतः अच्छी शिक्षा प्राप्ति के प्रति चेतना आवश्यक है।

शिक्षा के इतिहास में अतीत की जिस सीमा तक हम जा सकते हैं, जो बहुत पीछे नहीं है, वहाँ पर हम पाते हैं कि शिक्षा मनुष्य–समुदाय की स्वभाविक विशेषता रही है। उसने सामाजिक विकास के हर युग में मानव समाज को गति और दिशा प्रदान करने में सहायता की है। स्वयं शिक्षा का विकास कभी अवरूद्ध नहीं हुआ है; बल्कि मनुष्य के सर्वोच्च आदर्शों को उसने प्रवाहित किया है। मानव–इतिहास की व्यक्तिगत और सामूहिक रूप में उल्लेखनीय उपलब्धियों को शिक्षा से अलग नहीं किया जा सकता।[3] इतिहास के प्रवाह मार्ग को भी शिक्षा ने काफी सच्चाई से अंकित किया है; जिसमें कुछ युग उत्थान के, कुछ पतन के, कुछ संघर्ष के, कुछ निराशा के, कुछ काल–समन्वय के हैं तो कुछ बिखराव के भी हैं।

सनातन के संदर्भ में, गुरुकुल शिक्षण संस्थान एक नया मान्य उत्कृष्ट संस्था थी, इसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि सभी समाज के विभिन्न काल–खण्डों के समान अवस्था में शिक्षण–शालाओं का विकास हुआ। शिक्षा में शालाओं की व्यवस्था का सीधा संबंध लिखित भाषा के संगठन तथा प्रयोग के क्रमिक विकास के रूप में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।[1] लिखने–पढ़ने और सीखने वाली प्रक्रिया में गुरु और उसके आसपास शालाओं के कमरे में शिष्यों का रहकर अध्ययन करना स्वभाविक और आवश्यक था। सनातन शिक्षा पद्धति में कड़ा अनुशासन तथा आदेशात्मक शैक्षिककला निहित थी; जिसमें उन समाजों का ही प्रतिबिंब झलकता था।

काल–क्रम में, पुस्तकों ने ज्ञान प्रसारण के प्राचीन तरीकों को बदल दिया और उसके स्थान पर इन पूर्वाग्रहों को पोषित किया कि लिखित शब्द और उसकी मौखिक पुनरावृत्ति में जानने लायक जो कुछ भी है; वह सब ज्ञान उन्नति के लिए हैं और दैनिक जीवन में प्राप्त ज्ञान से श्रेष्ठतर हैं।[2] ज्ञान और परंपराओं का उत्तरोत्तर विकसित भण्डार हजारों वर्षों से गुरु से शिष्य को हस्तान्तरित होता आया है।

हम देश में रहें अथवा विदेश में, शिक्षा प्रत्येक स्थान पर हमारी सहायता करती है। वास्तव में, कल्पलता की भाँति शिक्षा हमारे लिये क्या–क्या नहीं करती? कहने का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार सूर्य

Corresponding Author: microsolutionbgp@gmail.com

का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है तथा सूर्य अस्त होने पर कुम्हला जाता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर व्यक्ति कमल के फूल की भाँति खिल उठता है तथा अशिक्षित रहने पर दरिद्रता, शोक एवं कष्ट के अन्धकार में डूब जाता है।

शिक्षा के संदर्भ में भारत विश्व गुरु रहा है। निःसंदेह भारत ने विश्व के देशों को सभ्यता का पाठ पढ़ाया। भारत की शिक्षा प्रणाली काफी प्राचीन है। जिस समय यूनान में सभ्यता का श्रीगणेश हो रहा था; उस वक्त भारत में सभ्यता एवं संस्कृति फल–फूल रही थी। वैदिक कालीन शिक्षा यथा नालंदा, ओदन्तपुरी, विक्रमशिला, काँची आदि स्थान के शिक्षा केन्द्रों ने विश्व के कोने–कोने से आये छात्रों को सभ्यता, संस्कृति, प्रेम, सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया। अंग्रेज विद्वान एफ० डब्लू० थॉमस ने कहा है कि, ''विश्व में, ऐसा कोई देश नहीं, जहाँ ज्ञान के प्रति आम लोगों का प्रेम इतने प्राचीन समय में ही प्रारंभ हुआ हो, जितना कि भारत में या जिसने शिक्षा जगत में इतना स्थायी प्रभाव उत्पन्न किया हो, जितना कि भारत ने।''[3]

रवीन्द्रनाथ टैगोर का भी यही सपना था, कि हमारे देश में शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो जो सबों को सर्वसुलभ हो। उन्होंने शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में, निम्न पंक्तियों को बंगला भाषा में लिखा था–''जहाँ दिमाग हो निर्भय और मस्तष्क स्वभिमान से खड़ा हो, जहाँ ज्ञान मिलता हो निःशुल्क, जहाँ दुनियाँ बँटी न हो छोटी–छोटी दीवारों में, जहाँ ज्ञान का सतत् धारा विद्रुपित विचारों की धाराओं में न खो जाए, चाहता हूँ ऐसा देश, चाहता हूँ ऐसी शिक्षा व्यवस्था जो हर अंधकार को प्रकाश में परिवर्तित कर दें।''[4]

सच तो यह है कि शिक्षा से इतने लाभ हैं, कि उनका वर्णन करना कठिन है। इस संदर्भ में यहाँ केवल इतना कह देना ही पर्याप्त होगा–कि ''बच्चों को शिक्षा, माता के समान पालन–पोषण करती है, पिता के समान उचित मार्ग–दर्शन करके कार्यों में लगाती है तथा पत्नी की भाँति सांसारिक चिन्ताओं को दूर कर प्रसन्नता प्रदान करती है।''[5] शिक्षा के ही द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों–दिशाओं में फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याएँ सुलझाती हैं एवं हमारे जीवन को सुसंस्कृत तथा गतिमान बनाती हैं।

भारतीय शिक्षा पद्धति की दृष्टि बड़ी सूक्ष्म और व्यापक है। इसकी अनेक शाखाएँ हैं, किन्तु प्रत्येक शाखा एक–दूसरे से अन्तर्सम्बद्ध है और प्रत्येक शाखा में अन्य शाखाओं के संदर्भ में विचार किया गया है।[6] इस प्रकार अनेक शाखा अपने आप में पूर्ण शिक्षा–पिण्ड बन जाती है।

गाँधीजी शिक्षा को समाज की एक अनिवार्य गति मानते थे। गाँधीजी के अनुसार शिक्षा का कोई अंतिम लक्ष्य निर्धारित नहीं किया जा सकता, जहाँ आकर शिक्षा को पूर्ण मान लिया जाए। शिक्षा जीवन की तैयारी न होकर स्वयं जीवन है। प्रयोजनवादी होने के नाते गाँधीजी शिक्षा के किसी पूर्व निश्चित उद्देश्य में विश्वास नहीं करते थे। उनका कहना था कि शिक्षा का उद्देश्य सदैव तात्कालिक होता है और जहाँ–तक क्रिया शिक्षाप्रद होगी, वहाँ तक शिक्षा उस साध्य को प्राप्त करेगी। वस्तुतः, शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य होने वाली अन्तःक्रिया ही शिक्षा है। गाँधीजी के अनुसार ''जिस व्यक्ति की आत्मा से दूसरे व्यक्ति की आत्मा में ज्ञान–शक्ति का संचार होता है, वह गुरु कहलाता है और जिसकी आत्मा में यह ज्ञान–शक्ति संचालित होती है, उसे शिष्य कहते हैं। उन्होंने समाज में शिक्षक के स्थान को बहुत महत्वपूर्ण माना है।

िक्षा शब्द के संदर्भ में भारतीय दृष्टिकोण

''शिक्षा ''संस्कृत'' शब्द है जो, शिक्षा विद्योपादने धातु के गुरोश्च हल सूत्र से भावार्थ में अप्रत्यय करने पर निष्पन्न माना गया है। इस रीति से विद्या–ग्रहण करना ही शिक्षा है।''[7] भारतीय मनीषियों ने विद्या को दो भागों में विभक्त किया है, 1. परा विद्या तथा 2. अपरा विद्या।

िक्षा का शाब्दिक अर्थ एवं परिभाषा :

शिक्षा को ''आंग्ल भाषा'' में 'एजूकेशन' कहते हैं। शिक्षा शास्त्रियों का मत है कि 'एजुकेशन' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा से हुई है। लैटिन भाषा के 'एडूकेटम' शब्द का अर्थ है शिक्षित करना। 'ए' का अर्थ है अन्दर से तथा 'डूके' का अर्थ है आगे बढ़ाना अथवा विकास अर्थात् अन्दर से विकास करना। एडूकेटम के अतिरिक्त उक्त दोनों शब्दों 'एडूसीयर' तथा 'एडूकेयर' का अर्थ भी यही है। 'एडूसीयर' का अर्थ है :–निकालना तथा 'एडूकेयर' का अर्थ है :–आगे बढ़ना, बाहर निकालना अथवा विकसित होना।[8] इस प्रकार शिक्षा शब्द का अर्थ जन्मजात आन्तरिक शक्तियों का सर्वांगींण विकास करना है। स्पष्ट है कि, शाब्दिक अर्थ के अनुसार शिक्षा एक विकास सम्बन्धी प्रक्रिया है। इसके संदर्भ में, शिक्षा की सामग्री का ज्ञान होना परम आवश्यक है।

िक्षा की अवधारणा :

शिक्षा इतिहास में, शिक्षा की अवधारणा के कई सोपान रहे हैं। अति प्राचीन काल से शिक्षा की अवधारणा शैक्षणिक जगत के विचारकों तथा शिक्षा शास्त्रियों के मस्तिष्कों को आंदोलित करती रही है। शिक्षा की गुणवत्ता, उसकी अपरिहार्यता एवं उसके योगदान को सभी युगों में स्वीकार किया गया है।

शिक्षा पद्धति की अवधारणा की सार्थकता एवं सर्वव्यापकता के लिए दो बातों की आवश्यकता होती है :–एक, विचार या योजना की तथा दूसरा, प्रयोग अथवा व्यवहार की। इनमें सिद्धान्त पूर्व पक्ष है और शिक्षा उत्तर पक्ष; दूसरे शब्दों में, चिंतन जीवन के लक्ष्य को निर्धारित करता है तथा गहन विचार और विश्लेषण कर सिद्धांतों का निर्माण करता है। शिक्षा और सिद्धांत प्रारंभ से ही एक–दूसरे के बहुत ही निकट रहे हैं। 'ज्ञान–तत्व' दोनों के मूल में निहित है। शिक्षा यदि 'ज्ञानोपार्जन' है तो चिंतन ''ज्ञानानुराग'।

शिक्षा शब्द एक व्यापक गुणार्थ है। इस कारण इसको सार रूप में परिभाषित करना कठिन है। जीवनशास्त्री, धर्मप्रवर्त्तक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, कूटनीतिज्ञ, शिक्षक, अभिभावक, राजनीतिज्ञ, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री आदि सभी प्रतिष्ठित विद्वानों ने इसको विभिन्न अर्थों में व्यक्त किया है। इस कारण शिक्षा बहुअर्थी है। प्रत्येक व्यक्ति जो इस शब्द के विषय में पढ़ता या सुनता है, वह इसको अपने हित की दृष्टि से विवेचित करता है। ये सभी, व्यक्ति जीवन के प्रति अपने दृष्टिकोण से इसकी विवेचना करते हैं।[9] वास्तव में, शिक्षा मानव–जीवन का समग्रीय अंश है। शिक्षा 'समग्र मानव' के विकास की बुनियादी दशा है।

साक्षरता का महत्त्व :

भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। दुर्भाग्यवश मध्यवर्ती काल में शिक्षा के क्षेत्र में भारत पिछड़ गया। बिहार राज्य का भागलपुर जिला भी इसका अपवाद नहीं है। यहाँ भी

शिक्षा के प्रति पुनर्जागरण की आवश्यकता है। 1947 ई० में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षा के उत्थान के लिए अनेक उपाय किये गए हैं। पिछले 67 वर्षों में शिक्षा के सभी क्षेत्रों में प्रशंसनीय प्रगति हुई है। लेकिन इसके बावजूद शिक्षा में क्षेत्रीय एवं लैंगिक स्तर पर अन्तर स्पष्ट दिखलाई पड़ते हैं।[10] शिक्षा का सही प्रदर्शन साक्षरता द्वारा किया जाना ही लाभप्रद है। स्त्रियों की शैक्षणिक प्रगति में सामाजिक आर्थिक परिस्थितियाँ विशेष रूप से बाधक रही हैं। अतः इस शोध प्रबंध में शैक्षणिक पिछड़ापन को आर्थिक पिछड़ापन के लिए उत्तरदायी माना गया है।

भागलपुर जिला में कुल साक्षरता 63.14 प्रतिशत है, जिसमें पुरुष साक्षरता 72.30 प्रतिशत और महिला साक्षरता 56.49 प्रतिशत है जिसमें नगरीय क्षेत्रो की कुल साक्षरता 75.87 प्रतिशत (पुरुष 80.73 तथा महिला 70.33 प्रतिशत) और ग्रामीण क्षेत्रों की कुल साक्षरता 59.84 प्रतिशत (पुरुष 67.61 तथा महिला 50.86 प्रतिशत) है। स्पष्ट है कि साक्षरता एवं नगरीकरण में धनात्मक संबंध है। सबसे अधिक साक्षरता जगदीशपुर प्रखंड में 73.94 प्रतिशत पायी जाती है, जबकि सबसे कम साक्षरता इस्माइलपुर प्रखंड में 50.52 प्रतिशत है।

तालिका संख्या : 1.1
भागलपुर जिला : अनुसूचित जाति के साक्षर एवं निरक्षरों की संख्या लिंग के आधार पर साक्षरता दर, 2011

प्रखण्ड का नाम	साक्षर एवं निरक्षों की संख्या						साक्षरता दर			पुरूश एवं महिला साक्षरता दर में अन्तर
	साक्षरों की संख्या			निरक्षों की संख्या						
	कुल	पुरूश	महिला	कुल	पुरूश	महिला	कुल	पुरूश	महिला	
नारायणपुर	2588	1643	945	3785	1742	2043	51.74	60.87	41.03	19.84
थ्बहपुर	4413	2868	1545	6669	3018	3651	50.39	60.48	38.48	22
खरीक	4285	2717	1568	6577	3060	3517	50.48	59.9	39.67	20.23
नवगछिया	3021	1888	1133	3637	1692	1945	57.39	65.88	47.25	18.63
रंगराचौक	3053	1916	1137	4606	2179	2427	50.8	58.67	41.44	17.23
गोपालपुर	3379	2116	1263	4281	1979	2302	56.04	64.85	45.65	19.2
पीरपैंती	11295	7135	4160	18676	8894	9782	47.13	54.88	37.94	16.94
कहलगाँव	17254	10896	6358	29177	13868	15309	47.02	54.9	37.74	17.16
इस्माईलपुर	1018	644	374	1523	721	802	51.78	59.3	42.5	16.8
सबौर	8181	4974	3207	7414	3383	4031	65.85	73.79	56.44	17.35
नाथनगर	6788	4225	2563	9032	4152	4880	54.53	63.41	44.3	19.11

सुल्तानगंज	11667	7233	4434	14919	6864	8055	54.55	62.99	44.77	18.22
शाहकुण्ड	10180	6298	3882	14947	7058	7889	50.86	58.68	41.81	16.87
गोराडीह	7616	4803	2813	12599	6051	6548	47.48	54.94	38.53	16.41
जगदीशपुर	5590	3497	2093	7165	3322	3843	55.34	64.32	44.88	19.44
सन्हौला	9314	5921	3393	14439	6583	7856	49.94	59.77	38.81	20.96
कुल	109642	68774	40868	159446	74566	84880	51.42	59.8	41.6	18.2

स्त्रोत : सेन्सस ऑफ इण्डिया, 2011

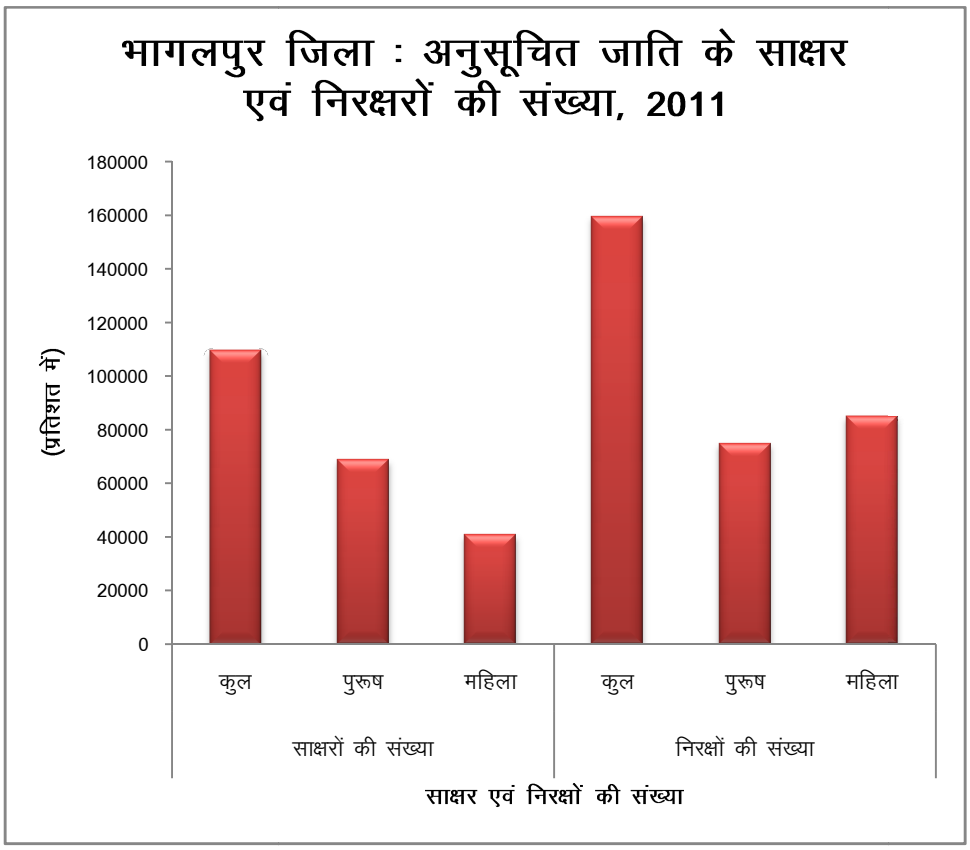

चित्र सं0 : 1.2

तालिका संख्या 1.1 एवं चित्र सं0 1.2 से स्पष्ट है कि कुल साक्षरों की संख्या 109642 है। सबसे अधिक साक्षरों की संख्या कहलगांव प्रखण्ड 17254 में है, जबकि सबसे कम साक्षरों की संख्या इस्माईलपुर प्रखण्ड 1018 है। कुल पुरूष साक्षरों की संख्या 68774 है। सबसे अधिक पुरूष साक्षरों की संख्या कहलगांव प्रखण्ड में 10896 है, जबकि सबसे कम पुरूष साक्षरों की संख्या इस्माईलपुर प्रखण्ड 644 है। कुल महिला

साक्षरों की संख्या 40868 है। सबसे अधिक महिला साक्षरों की संख्या कहलगांव प्रखण्ड 6358 में है, जबकि सबसे कम महिला साक्षरों की संख्या इस्माईलपुर प्रखण्ड 374 है। कुल निरक्षरों की संख्या 159446 है। सबसे अधिक निरक्षरों की संख्या कहलगांव प्रखण्ड 29177 में है, जबकि सबसे कम निरक्षरों की संख्या इस्माईलपुर प्रखण्ड 1523 है। कुल पुरूष निरक्षरों की संख्या 74566 है। सबसे अधिक पुरूष निरक्षरों की संख्या कहलगांव प्रखण्ड 13868 में है, जबकि सबसे कम पुरूष निरक्षरों की संख्या इस्माईलपुर प्रखण्ड 721 है। कुल महिला निरक्षरों की संख्या 84880 है। सबसे अधिक महिला निरक्षरों की संख्या कहलगांव प्रखण्ड 15309 में है, जबकि सबसे कम महिला निरक्षरों की संख्या इस्माईलपुर प्रखण्ड 802 है।

निश्कर्श

शिक्षा के सन्दर्भ में विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों के मतों के आधार पर शिक्षा, मानवीय जीवन में व्यक्ति को जहाँ एक ओर वातावरण से अनुकूलन करने, उसमें उन्नति और विकास करने हेतु आवश्यकतानुसार परिवर्तन करती है। भौतिक सम्पन्नता को प्राप्त करके चरित्रवान, बुद्धिमान, वीर, साहसी तथा आदर्श नागरिक के रूप में आत्मनिर्भर बनाकर, शिक्षा उसका सर्वांगींण विकास करती है, वहीं दूसरी ओर शिक्षा जीवन में व्यक्ति के अन्दर राष्ट्रीय एकता, भावनात्मक एकता, सामाजिक कुशलता तथा राष्ट्रीय अनुशासन आदि भावनाओं को विकसित करके उसे इस योग्य व्यक्ति बना देती है, कि वह सामाजिक कर्त्तव्यों को पूरा करते हुए राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता देने की भावना से ओत–प्रोत हो जाय। वास्तव में, शिक्षा के प्रभाव से मनुष्य सामान्य जीवन में इतने अधिक कार्य करता है, जिससे व्यक्ति तथा समाज निरन्तर उन्नति के शिखर पर चढ़ते रहते हैं। शिक्षा समस्त मानवता को अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलने वाली ज्योति है। शिक्षा किसी देश की वास्तविक शक्ति है। शिक्षा के प्रसार का मापन साक्षरता द्वारा संभव है। शिक्षा अमृत कोष के समान और अशिक्षा विषरूपी कुण्ड है। शिक्षित व्यक्ति पर्यावरण की शुद्धता एवं स्वच्छता को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं तथा स्वराज्य की रक्षा कर सकते है। शिक्षा की अनोखी शक्ति ही व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं सम्पूर्ण विश्व की रक्षा करने में समर्थ है। अतः शिक्षा स्वतंत्रता की कुंजी है। फलतः शिक्षा में प्रगति समाज और राष्ट्र के विकास के मूल मंत्र हैं। स्पष्ट है कि किसी भी देश या समाज की उन्नति का मापदण्ड शिक्षा है। शिक्षा के बिना न तो आर्थिक विकास संभव है और न ही सामाजिक परिवर्तन हो सकता है।

संदर्भ–सूची :

1. अग्रवाल, जे०सी० (2010) : भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, शिरा, दिल्ली
2. अग्रवाल के.के. (2009) : भारत में शिक्षा का विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2
3. अविनाशलिंगम, टी०एस० (1954) : अन्डरस्टैण्डिंग बेसिक एजूकेशन, प्रकाशक शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

4. अग्रवाल, एम०डी० (2004) : ग्लोबल बिजनेस स्कूल : एन इंडियन प्रॉसपेक्टिव, विलिंगकर्स रिसर्च जर्नल, वोल्यूम 2, इश्यू–4

5. अल्वी, जमीर (2005) : स्टैटिसटिकल ज्योग्राफी : मेथड्स एण्ड एप्लीकेशन, रावत पब्लिकेशन जयपुर, नई दिल्ली

6. आहुजा, राम (2004) : सामाजिक अनुसंधान, रावत पब्लिकेशन जयपुर, नई दिल्ली

7. इ० बी० एण्ड एरोवूड (1994) : द डब्लपमेन्ट ऑफ मार्डन एजूकेशन

8. कुमार, अनिल (1995) : बिहार का भूगोल, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

9. कुमार, संतोष (2005) : बिहार का भूगोल, नये बिहार की भौगोलिक आर्थिक परिदृश्य, स्टुडेन्ट बुक सेंटर, पटना

10. कुमार, चन्दन (2007) : शिक्षा व्यवस्था कितनी सही, विचार सारांश, राजकमल प्रिंटर्स, दिल्ली